

चाणक्य नीति

•••
1

201. आप चाहे सौ बार पवित्र जल में स्नान करे, आप अपने मन का मैल नहीं धो सकते. उसी प्रकार जिस प्रकार मदिरा का पात्र पवित्र नहीं हो सकता चाहे आप उसे गरम करके सारी मदिरा की भाप बना दे.

Mental dirt cannot be washed away even by one-hundred baths in the sacred waters, just as a wine pot cannot be purified even by evaporating all the wine by fire.

202. इसमें कोई आश्चर्य नहीं की व्यक्ति उन बातों के प्रति अनुदगार कहता है जिसका उसे कोई ज्ञान नहीं. उसी प्रकार जैसे एक जंगली शिकारी की पत्नी हाथी के सर का मणि फेककर गूजे की माला धारण करती है.

It is not strange if a man reviles (Degrades) a thing of which he has no knowledge, just as a wild hunter's wife throws away the pearl that is found in the head of an elephant, and picks up a gunj(a type of seed which poor tribals wear as ornaments).

203. जो व्यक्ति एक साल तक भोजन करते समय भगवान् का ध्यान करेगा और मुह से कुछ नहीं बोलेगा उसे एक हजार करोड़ वर्ष तक स्वर्ग लोक की प्राप्ति होगी.

He who for one year eats his meals silently (inwardly meditating upon the Lord's prasadam); attains to the heavenly planets for a thousand crore of years. (Note: one crore equals ten million)

204. एक विद्यार्थी पूर्ण रूप से निम्न लिखित बातों का त्याग करे.

१. काम २. क्रोध ३. लोभ ४. स्वादिष्ट भोजन की अपेक्षा ५. शरीर का शृंगार ६. अत्याधिक जिज्ञासा ७. अधिक निद्रा ८. शरीर निर्वाह के लिए अत्याधिक प्रयास.

The student (brahmacari) should completely renounce the following eight things -- his lust, anger, greed, desire for sweets, sense of decorating the body, excessive curiosity, excessive sleep, and excessive endeavour for bodily maintenance.

205. वही सही में ब्राह्मण है जो केवल एक बार के भोजन से संतुष्ट रहे, जिस पर १६ संस्कार किये गए हो, जो अपनी पत्नी के साथ महीने में केवल एक दिन समागम करे. माहवारी समाप्त होने के दुसरे दिन.

He alone is a true brahmana (dvija or "twice-born") who is satisfied with one meal a day, who has the six samskaras (or acts of purification such as garbhadhana, etc.) performed for him, and who cohabits with his wife only once in a month on an auspicious day after her menses.

चाणक्य नीति

2

206. वह ब्राह्मण जो दुकानदारी में लगा है, असल में वैश्य ही है.

The brahmana who is engrossed in worldly affairs, brings up cows and is engaged in trade is really called a vaishya.

207. निम्न स्तर के लोगो से जिस व्यवसाय में संपर्क आता है, वह व्यवसाय ब्राह्मण को शुद्र बना देता है.

The brahmana who deals in lac-die, articles, oil, indigo, silken cloth, honey, clarified butter, liquor, and flesh is called a shudra.

208. वह ब्राह्मण जो दुसरो के काम में अड़ंगे डालता है, जो दम्भी है, स्वार्थी है, धोखेबाज है, दुसरो से घृणा करता है और बोलते समय मुह में मिठास और हृदय में क्रूरता रखता है, वह एक बिल्ली के समान है.

The brahmana who thwarts the doings of others, who is hypocritical, selfish, and a deceitful hater, and while speaking mildly cherishes cruelty in his heart, is called a cat.

209. एक ब्राह्मण जो तालाब को, कुए को, टाके को, बगीचे को और मंदिर को नष्ट करता है, वह म्लेच्छ है.

The brahmana who destroys a pond, a well, a tank, a garden and a temple is called a mleccha.

210. वह ब्राह्मण जो भगवान् के मूर्ति की सम्पदा चुराता है और वह अध्यात्मिक गुरु जो दुसरे की पत्नी के साथ समागम करता है और जो अपना गुजारा करने के लिए कुछ भी और सब कुछ खाता है वह चांडाल है.

The brahmana who steals the property of the Deities and the spiritual preceptor, who cohabits with another's wife, and who maintains himself by eating anything and everything s called a chandala.

211. एक गुणवान व्यक्ति को वह सब कुछ दान में देना चाहिए जो उसकी आवश्यकता से अधिक है. केवल दान के कारण ही कर्ण, बाली और राजा विक्रमादित्य आज तक चल रहे हैं. देखिये उन मधु मख्खियों को जो अपने पैर दुखे से धारती पर पटक रही है. वो अपने आप से कहती है " आखिर में सब चला ही गया. हमने हमारे शहद को जो बचा कर रखा था, ना ही दान दिया और ना ही खुद खाया. अभी एक पल में ही कोई हमसे सब छीन कर चला गया."

चाणक्य नीति

3

The meritorious should give away in charity all that they have in excess of their needs. By charity only Karna, Bali and King Vikramaditya survive even today. Just see the plight of the honeybees beating their legs in despair upon the earth. They are saying to themselves, "Alas! We neither enjoyed our stored-up honey nor gave it in charity, and now someone has taken it from us in an instant."

212. वह गृहस्थ भगवान् की कृपा को पा चुका है जिसके घर में आनंददायी वातावरण है. जिसके बच्चे गुणी हैं. जिसकी पत्नी मधुर वाणी बोलती है. जिसके पास अपनी जरूरतें पूरा करने के लिए पर्याप्त धन है. जो अपनी पत्नी से सुखपूर्ण सम्बन्ध रखता है. जिसके नौकर उसका कहा मानते हैं. जिसके घर में मेहमान का स्वागत किया जाता है. जिसके घर में मंगल दायी भगवान की पूजा रोज की जाती है. जहा स्वाद भरा भोजन और पान किया जाता है. जिसे भगवान् के भक्तों की संगती में आनंद आता है.

He is a blessed grhastha (householder) in whose house there is a blissful atmosphere, whose sons are talented, whose wife speaks sweetly, whose wealth is enough to satisfy his desires, who finds pleasure in the company of his wife, whose servants are obedient, in whose house hospitality is shown, the auspicious Supreme Lord is worshiped daily, delicious food and drink is partaken, and who finds joy in the company of devotees.

213. जो एक संकट का सामना करने वाले ब्राह्मण को भक्ति भाव से अल्प दान देता है उसे बदले में विपुल लाभ होता है.

One who devotedly gives a little to a brahmana who is in distress is recompensed abundantly. Hence, O Prince, what is given to a good brahmana is got back not in an equal quantity, but in an infinitely higher degree.

214. वे लोग जो इस दुनिया में सुखी हैं. जो अपने संबंधियों के प्रति उदार हैं. अनजाने लोगों के प्रति सहृदय हैं. अच्छे लोगों के प्रति प्रेम भाव रखते हैं. नीच लोगों से धूर्तता पूर्ण व्यवहार करते हैं. विद्वानों से कुछ नहीं छुपाते. दुश्मनों के सामने साहस दिखाते हैं. बड़ों के प्रति विनम्र और पत्नी के प्रति सख्त हैं.

Those men who are happy in this world, who are generous towards their relatives, kind to strangers, indifferent to the wicked, loving to the good, shrewd in their dealings with the base, frank with the learned, courageous with enemies, humble with elders and stern with the wife.

चाणक्य नीति

4

215. अरे लोमड़ी !!! उस व्यक्ति के शरीर को तुरंत छोड़ दे. जिसके हाथो ने कोई दान नहीं दिया. जिसके कानो ने कोई विद्या ग्रहण नहीं की. जिसके आँखों ने भगवान् का सच्चा भक्त नहीं देखा. जिसके पाँव कभी तीर्थ क्षेत्रो में नहीं गए. जिसने अधर्म के मार्ग से कमाए हुए धन से अपना पेट भरा. और जिसने बिना मतलब ही अपना सर ऊँचा उठा रखा है. अरे लोमड़ी !! उसे मत खा. नहीं तो तू दूषित हो जाएगी.

O jackal, leave aside the body of that man at once, whose hands have never given in charity, whose ears have not heard the voice of learning, whose eyes have not beheld a pure devotee of the Lord, whose feet have never traversed to holy places, whose belly is filled with things obtained by crooked practices, and whose head is held high in vanity. Do not eat it, O jackal, otherwise you will become polluted.

216. धिक्कार है उन्हें जिन्हें भगवान् श्री कृष्ण जो माँ यशोदा के लाडले हैं उन के चरण कमलो में कोई भक्ति नहीं. मृदंग की ध्वनि धिक् तम धिक् तम करके ऐसे लोगो का धिक्कार करती हैं.

"Shame upon those who have no devotion to the lotus feet of Sri Krishna, the son of mother Yasoda; who have no attachment for the describing the glories of Srimati Radharani; whose ears are not eager to listen to the stories of the Lord's lila." Such is the exclamation of the mrdanga sound of dhik-tam dhik-tam dhigatam at kirtana.

217. बसंत ऋतू क्या करेगी यदि बास पर पत्ते नहीं आते. सूर्य का क्या दोष यदि उल्लू दिन में देख नहीं सकता. बादलो का क्या दोष यदि बारिश की बूंदे चातक पक्षी की चोच में नहीं गिरती. उसे कोई कैसे बदल सकता है जो किसी के मूल में है.

What fault of spring that the bamboo shoot has no leaves? What fault of the sun if the owl cannot see during the daytime? Is it the fault of the clouds if no raindrops fall into the mouth of the chatak bird? Who can erase what Lord Brahma has inscribed upon our foreheads at the time of birth?

218. एक दुष्ट के मन में सद्गुणों का उदय हो सकता है यदि वह एक भक्त से सत्संग करता है. लेकिन दुष्ट का संग करने से भक्त दूषित नहीं होता. जमीन पर जो फूल गिरता है उससे धरती सुगन्धित होती है लेकिन पुष्प को धरती की गंध नहीं लगती.

A wicked man may develop saintly qualities in the company of a devotee, but a devotee does not become impious in the company of a wicked person. The earth is scented by a flower that falls upon it, but the flower does not contact the odour of the earth.

चाणक्य नीति

• 5 •

219. उसका सही में कल्याण हो जाता है जिसे भक्त के दर्शन होते हैं. भक्त में तुरंत शुद्ध करने की क्षमता है. पवित्र क्षेत्र में तो लम्बे समय के संपर्क से शुद्धि होती है.

One indeed becomes blessed by having darshan of a devotee; for the devotee has the ability to purify immediately, whereas the sacred tirtha gives purity only after prolonged contact.

220. एक अजनबी ने एक ब्राह्मण से पूछा. "बताइए, इस शहर में महान क्या है?". ब्राह्मण ने जवाब दिया की खजूर के पेड़ का समूह महान है.

अजनबी ने सवाल किया की यहाँ दानी कौन है? जवाब मिला के वह धोबी जो सुबह कपड़े ले जाता है और शाम को लौटाता है.

प्रश्न हुआ यहाँ सबसे काबिल कौन है. जवाब मिला यहाँ हर कोई दुसरे का द्रव्य और दारा हरण करने में काबिल है.

प्रश्न हुआ की आप ऐसी जगह रह कैसे लेते हो? जवाब मिला की जैसे एक कीड़ा एक दुर्गन्ध युक्त जगह पर रहता है.

A stranger asked a brahmana, "Tell me, who is great in this city?" The brahmana replied, "The cluster of palmyra trees is great." Then the traveller asked, "Who is the most charitable person?" The brahmana answered, "The washerman who takes the clothes in the morning and gives them back in the evening is the most charitable." He then asked, "Who is the ablest man?" The brahmana answered, "Everyone is expert in robbing others of their wives and wealth." The man then asked the brahmana, "How do you manage to live in such a city?" The brahmana replied, "As a worm survives while even in a filthy place so do I survive here!"

221. वह घर जहा ब्राह्मणों के चरण कमल को धोया नहीं जाता, जहा वैदिक मंत्रों का जोर से उच्चारण नहीं होता. और जहा भगवान् को और पितरों को भोग नहीं लगाया जाता वह घर एक स्मशान है.

The house in which the lotus feet of brahmanas are not washed, in which Vedic mantras are not loudly recited, and in which the holy rites of svaha (sacrificial offerings to the Supreme Lord) and swadha (offerings to the ancestors) are not performed, is like a crematorium.

222. सत्य मेरी माता है. अध्यात्मिक ज्ञान मेरा पिता है. धर्माचरण मेरा बंधू है. दया मेरा मित्र है. भीतर की शांति मेरी पत्नी है. क्षमा मेरा पुत्र है. मेरे परिवार में ये छह लोग हैं.

चाणक्य नीति

6

(It is said that a sadhu, when asked about his family, replied thusly): truth is my mother, and my father is spiritual knowledge; righteous conduct is my brother, and mercy is my friend, inner peace is my wife, and forgiveness is my son: these six are my kinsmen.

223. हमारे शारीर नश्वर है. धन में तो कोई स्थायी भाव नहीं है. मृत्यु हरदम हमारे निकट है. इसीलिए हमें तुरंत पुण्य कर्म करने चाहिए.

Our bodies are perishable, wealth is not at all permanent and death is always nearby. Therefore we must immediately engage in acts of merit.

224. ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन में आनंद आता है. गायों को ताज़ी कोमल घास खाने में. पत्नी को पति के सान्निध्य में. क्षत्रियों को युद्ध में आनंद आता है.

Arjuna says to Krishna. "Brahmanas find joy in going to feasts, cows find joy in eating their tender grass, wives find joy in the company of their husbands, and know, O Krishna, that in the same way I rejoice in battle.

225. जो दूसरे के पत्नी को अपनी माता मानता है, दूसरे को धन को मिट्टी का ढेला, दूसरे के सुख दुःख को अपने सुख दुःख. उसी को सही दृष्टी प्राप्त है और वही विद्वान है.

He who regards another's wife as his mother, the wealth that does not belong to him as a lump of mud, and the pleasure and pain of all other living beings as his own -- truly sees things in the right perspective, and he is a true pandit.

226. भगवान राम में ये सब गुण है. १. सद्गुणों में प्रीति. २. मीठे वचन ३. दान देने की तीव्र इच्छा शक्ति. ४. मित्रों के साथ कपट रहित व्यवहार. ५. गुरु की उपस्थिति में विनम्रता ६. मन की गहरी शान्ति. ६. शुद्ध आचरण ७. गुणों की परख ८. शास्त्र के ज्ञान की अनुभूति ८. रूप की सुन्दरता ९. भगवत भक्ति.

O Raghava, the love of virtue, pleasing speech, and an ardent desire for performing acts of charity, guileless dealings with friends, humility in the guru's presence , deep tranquillity of mind, pure conduct, discernment of virtues, realised knowledge of the sastras, beauty of form and devotion to God are all found in you." (The great sage Vasistha Muni, the spiritual preceptor of the dynasty of the sun, said this to Lord Ramachandra at the time of His proposed coronation).

227. कल्प तरु तो एक लकड़ी ही है. सुवर्ण का सुमेर पर्वत तो निश्चल है. चिंता मणि तो एक पत्थर है. सूर्य में ताप है. चन्द्रमा तो घटता बढ़ता रहता है. अमर्याद समुद्र तो खारा है. काम देव

चाणक्य नीति

7

का तो शरीर ही जल गया. महाराज बलि तो राक्षस कुल में पैदा हुए. कामधेनु तो पशु ही हैं. भगवान् राम के समान कौन है.

The desire tree is wood; the golden Mount Meru is motionless; the wish-fulfilling gem cintamani is just a stone; the sun is scorching; the moon is prone to wane; the boundless ocean is saline; the demigod of lust lost his body (due to Shiva's wrath); Bali Maharaja, the son of Diti, was born into a clan of demons; and Kamadhenu (the cow of heaven) is a mere beast. O Lord of the Raghu dynasty! I cannot compare you to any one of these (taking their merits into account).

228. विद्या सफ़र में हमारा मित्र है. पत्नी घर पर मित्र है. औषधि रुग्ण व्यक्ति की मित्र है. मरते वक्त तो पुण्य कर्म ही मित्र है.

Realised learning (vidya) is our friend while travelling , the wife is a friend at home, medicine is the friend of a sick man, and meritorious deeds are the friends at death.

229. राज परिवारों से शिष्टाचार सीखे. पंडितों से बोलने की कला सीखे. जुआरियों से झूट बोलना सीखे. एक औरत से छल सीखे.

Courtesy should be learned from princes, the art of conversation from pandits, lying should be learned from gamblers and deceitful ways should be learned from women.

230. बिना सोचे समझे खर्च करने वाला, नटखट बच्चा जिसे अपना घर नहीं, झगड़े पर आमदा आदमी, अपनी पत्नी को दुर्लक्षित करने वाला, जो अपने आचरण पर ध्यान नहीं देता है. ये सब लोग जल्दी ही बर्बाद हो जायेंगे.

The unthinking spender, the homeless urchin (|e@p`|ob#), the quarrel monger, the man who neglects his wife and is heedless in his actions -- all these will soon come to ruination.

231. एक विद्वान व्यक्ति ने अपने भोजन की चिंता नहीं करनी चाहिए. उसे सिर्फ अपने धर्म को निभाने की चिंता होनी चाहिए. हर व्यक्ति का भोजन पर जन्म से ही अधिकार है.

The wise man should not be anxious about his food; he should be anxious to be engaged only in dharma (Krishna consciousness). the food of each man is created for him at his birth.

232. जिसे दौलत, अनाज और विद्या अर्जित करने में और भोजन करने में शर्म नहीं आती वह सुखी रहता है.

चाणक्य नीति

8

He who is not shy in the acquisition of wealth, grain and knowledge, and in taking his meals, will be happy.

233. बूंद बूंद से सागर बनता है. इसी तरह बूंद बूंद से ज्ञान, गुण और संपत्ति प्राप्त होते हैं.

As centesimal droppings will fill a pot so also are knowledge, virtue and wealth gradually obtained.

234. जो व्यक्ति अपने बुढ़ापे में भी मुख है वह सचमुच ही मुख है. उसी प्रकार जिस प्रकार इन्द्र वरुण का फल कितना भी पके मीठा नहीं होता.

The man who remains a fool even in advanced age is really a fool, just as the Indra-Varuna fruit does not become sweet no matter how ripe it might become.

235. यदि आदमी एक पल के लिए भी जिए तो भी उस पल को वह शुभ कर्म करने में खर्च करे. एक कल्प तक जी कर कोई लाभ नहीं. दोनों लोक इस लोक और पर-लोक में तकलीफ होती है.

A man may live but for a moment, but that moment should be spent in doing auspicious deeds. It is useless living even for a kalpa (4,320,000 *1000 years) and bringing only distress upon the two worlds (this world and the next).

236. हम उसके लिए ना पछताए जो बीत गया. हम भविष्य की चिंता भी ना करे. विवेक बुद्धि रखने वाले लोग केवल वर्तमान में जीते हैं.

We should not fret for what is past, nor should we be anxious about the future; men of discernment deal only with the present moment.

237. यह देवताओ का, संत जनों का और पालको का स्वभाव है की वे जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं. निकट के और दूर के रिश्तेदार तब प्रसन्न होते हैं जब उनका आदर सम्मान किया जाए. उनके नहाने का, खाने पाने का प्रबंध किया जाए. पंडित जन जब उन्हें अध्यात्मिक सन्देश का मौका दिया जाता है तो प्रसन्न होते हैं.

It certainly is nature of the demigods, men of good character, and parents to be easily pleased. Near and distant relatives are pleased when they are hospitably received with bathing, food, and drink; and pandits are pleased with an opportunity for giving spiritual discourse.

चाणक्य नीति

९

238. जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तो यह पाच बातें तय हो जाती हैं...

१. कितनी लम्बी उम्र होगी.
२. वह क्या करेगा
३. और
४. कितना धन और ज्ञान अर्जित करेगा.
५. मौत कब होगी.

Even as the unborn babe is in the womb of his mother, these five are fixed as his life destiny: his life span, his activities, his acquisition of wealth and knowledge, and his time of death.

239. देखिये क्या आश्चर्य है? बड़े लोग अनोखी बातें करते हैं. वे पैसे को तो तिनके की तरह मामूली समझते हैं लेकिन जब वे उसे प्राप्त करते हैं तो उसके भार से और विनम्र होकर झुक जाते हैं.

O see what a wonder it is! The doings of the great are strange: they treat wealth as light as a straw, yet, when they obtain it, they bend under its weight.

240. जो व्यक्ति अपने घर के लोगों से बहुत आसक्ति रखता है वह भय और दुःख को पाता है. आसक्ति ही दुःख का मूल है. जिसे सुखी होना है उसे आसक्ति छोड़नी पड़ेगी.

He who is overly attached to his family members experiences fear and sorrow, for the root of all grief is attachment. Thus one should discard attachment to be happy.

241. जो भविष्य के लिए तैयार है और जो किसी भी परिस्थिति को चतुराई से निपटता है. ये दोनों व्यक्ति सुखी हैं. लेकिन जो आदमी सिर्फ नसीब के सहारे चलता है वह बर्बाद होता है.

He who is prepared for the future and he who deals cleverly with any situation that may arise are both happy; but the fatalistic man who wholly depends on luck is ruined.

242. यदि राजा पुण्यात्मा है तो प्रजा भी वैसी ही होती है. यदि राजा पापी है तो प्रजा भी पापी. यदि वह सामान्य है तो प्रजा सामान्य. प्रजा के सामने राजा का उद्धारण होता है. और वो उसका अनुसरण करती है.

If the king is virtuous, then the subjects are also virtuous. If the king is sinful, then the subjects also become sinful. If he is mediocre, then the subjects are mediocre. The subjects follow the example of the king. In short, as is the king so are the subjects.

243. मेरी नजरों में वह आदमी मृत है जो जीते जी धर्म का पालन नहीं करता. लेकिन जो धर्म पालन में अपने प्राण दे देता है वह मरने के बाद भी बेशक लम्बा जीता है.

चाणक्य नीति

10

I consider him who does not act religiously as dead though living, but he who dies acting religiously unquestionably lives long though he is dead.

244. जिस व्यक्ति ने न ही कोई ज्ञान संपादन किया, ना ही पैसा कमाया, मुक्ति के लिए जो आवश्यक है उसकी पूर्ति भी नहीं किया. वह एक निहायत बेकार जिंदगी जीता है जैसे के बकरी की गर्दन से झूलने वाले स्तन.

He who has acquired neither virtue, wealth, satisfaction of desires nor salvation (dharma, artha, kama, moksa), lives an utterly useless life, like the "nipples" hanging from the neck of a goat.

245. जो नीच लोग होते हैं वो दूसरे की कीर्ति को देखकर जलते हैं. वो दूसरे के बारे में अपशब्द कहते हैं क्यों की उनकी कुछ करने की औकात नहीं है.

The hearts of base men burn before the fire of other's fame, and they slander them being themselves unable to rise to such a high position.

246. यदि विषय बहुत प्रिय है तो वो बंधन में डालते हैं. विषय सुख की अनासक्ति से मुक्ति की और गति होती है. इसीलिए मुक्ति या बंधन का मूल मन ही है.

Excessive attachment to sense pleasures leads to bondage, and detachment from sense pleasures leads to liberation; therefore it is the mind alone that is responsible for bondage or liberation.

247. जो आत्म स्वरूप का बोध होने से खुद को शारीर नहीं मानता, वह हरदम समाधी में ही रहता है भले ही उसका शरीर कही भी चला जाए.

He who sheds bodily identification by means of knowledge of the indwelling Supreme Self (Paramatma), will always be absorbed in meditative trance (samadhi) wherever his mind leads him.

248. किस को सब सुख प्राप्त हुए जिसकी कामना की. सब कुछ भगवान् के हाथ में है. इसलिए हमें संतोष में जीना होगा.

Who realises all the happiness he desires? Everything is in the hands of God. Therefore one should learn contentment.

249. जिस प्रकार एक गाय का बछड़ा, हजारो गायो में अपनी माँ के पीछे चलता है उसी तरह कर्म आदमी के पीछे चलते हैं.

चाणक्य नीति

11

As a calf follows its mother among a thousand cows, so the (good or bad) deeds of a man follow him.

250. जिस के काम करने में कोई व्यवस्था नहीं, उसे कोई सुख नहीं मिल सकता. लोगो के बीच या वन में. लोगो के मिलने से उसका हृदय जलता है और वन में तो कोई सुविधा होती ही नहीं.

He whose actions are disorganised has no happiness either in the midst of men or in a jungle -- in the midst of men his heart burns by social contacts, and his helplessness burns him in the forest.

दोस्तों चाणक्य के आगे के सूत्र आप यहाँ से डाउनलोड कर सकते हैं.

1. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 2- Chanakya Quotes \[51-100\]](#)
2. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 2- Chanakya Quotes \[51-100\]](#)
3. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 3-Chanakya Quotes \[101-150\]](#)
4. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 4-Chanakya Quotes \[151-200\]](#)
5. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 5-Chanakya Quotes \[201-250\]](#)
6. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 6-Chanakya Quotes \[251-300\]](#)
7. डाउनलोड > [चाणक्य नीति पार्ट 7-Chanakya Quotes \[301-350\]](#)

[सम्पूर्ण चाणक्य नीति पढने के लिए यहाँ क्लिक करें](#)